ब्रह्मा बाबा- एक बहु-आयामी व्यक्तित्व

महापुरूषों का जीवन एक चमत्कार होता है। उनका जन्म साधारण मनुष्य की तरह ही होता है पर जीते हैं वे एक असाधारण मनुष्य की तरह। जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है किन्तु जिस जीवन से देश व समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी किसी में होता है। भारतीय संस्कृति के प्राण अहिंसा और त्याग के प्रतिमूर्ति ने इन सभी आदर्शों को चरितार्थ किया है। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी ब्रह्मा बाबा समाज के लिए पथ प्रदर्शक थे।

- ब्र.कु.गंगाधर

ब्रह्मा बाबा एक बहु-आयामीय व्यक्ति थे। सबसे पहली बात और सबसे प्रमुख बात तो यह थी कि वे नैतिकता के विशाल विग्रह थे। उन्होंने लोक-मत के दबाव में आकर या किसी भी आर्थिक कारण वश अपने किसी भी नैतिक सिद्धांत का उल्लंघन नहीं किया। वे उत्कृष्ट बौद्धिक समग्रता तथा अद्वितीय नैतिक श्रेष्ठता से सम्पन्न व्यक्ति थे। आध्यात्मिक उत्कर्ष और मानसिक धृति की दृष्टि से वे योगाचार के एक जीते-जागते उदाहरण थे।

एक योग्य प्रशासक, एक दूरदर्शी योजनाकार तथा एक महान दृष्टा

तथापि, वे मात्र एक सुधारक नहीं थे, बल्कि एक महान प्रशासक भी थे, जिनकी प्रशासन-प्रणाली मनुष्यों के प्रति प्रेम और सम्मान पर आधारित थी। वे मानव-जाति की सेवा से अभिप्रेरित थे और दिव्य गीत से परिपूर्णता प्राप्त करना उनका लक्ष्य था।

वे एक बुद्धिमान तथा दूरदर्शी आत्मज्ञ थे। उनके पास विलक्षण दृष्टि थी। अपने समय से बहुत आगे की ओर देखकर उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था को एक ईश्वरीय विश्व विद्यालय का रूप दिया और उसे एक आत्म-निर्भर तथा स्वावलंबी प्रणाली बना दिया।

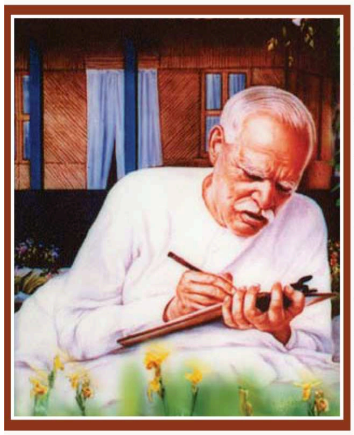

वे पूर्वानुमान कर सकते थे कि कौन-सी आत्मायें भविष्य में किस भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं और करेंगी और, इसलिए, दशकों पूर्व उन्होंने उनकी देखभाल करने और उन्हें मार्गदर्शन देने का कार्य आरंभ कर दिया, ताकि उन्हें इन बड़े सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए तैयार किया जा सके। उन्होंने अल्पकालिक, मध्यकालिक तथा दीर्घकालिक आधार पर संस्था के विकास की योजना बनाई। उस समय, जबकि संस्था के विरुद्ध उग्र विरोध था, उन्होंने मानसिक रूप से यह देख लिया था कि भविष्य में संस्था के अनुयायियों की संख्या अकल्पनीय रूप से बढ़ेगी और उसके कार्य का स्वरूप क्या होगा और इसलिए उन्होंने उन्हें उन परिस्थितियों के लिए अद्वितीय पूर्व दृष्टि के साथ प्रशिक्षित किया। उनकी पूर्व दृष्टि और उनके आयोजन तथा मार्गदर्शन के कारण ही संस्था का इतना विस्तार हुआ जितना कि आज दिखाई देता है और संस्था को इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जितनी कि आज हम देखते हैं, और प्रथम, द्वितीय तथा अनुवर्ती पंक्तियों के समर्पित कार्यकर्ताओं की एक विशाल मंडली का निर्माण हुआ।

शिव बाबा की दर्शन-प्रणाली तथा आचार के सर्वोत्तम व्याख्याता

स्वयं को और विश्व को बेहतर ढ़ंग से और सही ढ़ंग से समझने में उन्होंने जो योगदान किया वह उनके गुणों का द्योतक है। यद्यपि स्वयं उन्हें औपचारिक विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी, तथापि बौद्धिक दृष्टि से वे एक असाधारण पुरुष थे, जो कि एक अद्वितीय विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए दैवी साधन बने। वे न केवल अधिमानसिकी की जटिलताओं और सूक्ष्मताओं में पारंगत थे, न केवल उनके पास अलौकिक विज्ञानों की गहरी पैठ थी, -शेष पेज 8 पर

विश्व ही बाबा के लिए परिवार समान था

निराकार शिव बाबा ने हम बच्चों को साकार में ब्रह्मा बाबा दिया है, उनको देखकर उनके हर कदम को फालो करना है।

साकार बाबा के गुण, कर्म सब ज्ञान में आने के पहले से ही श्रेष्ठ थे। परन्तु जब उनमें विदेही आया तो बहुत आकर्षण आ गयी। बाबा जब सभा में आता था, दृष्टि देता था तो एक-दो घण्टा ऐसे ही बैठे रहते थे। बाबा खुद ही हिलाता था कि बच्ची आओ, नीचे आओ। पहले ऊपर भेज देता था फिर बुलाता था। तो आत्मा को महसूस होता था कि मुझे अपना असली बाप और असली धाम मिल गया।

बाबा ने हमें ईश्वरीय प्यार देकर संसार को भुला दिया। बाबा ने हमें इशारों से ही महान बना दिया। हमारा परम भाग्य है जो जीवन के अनमोल क्षण उस महानतम पुरूष के साथ बीते। बाबा ने हमें नवजीवन दिया। बाबा का दिव्य स्वरूप आंखों के आगे घूम रहा है। मुझे पुरूषार्थ की बहुत चिन्ता होती थी। बाबा ने कहा, तुम चिंता मत करो। तुम श्रीमत पर चलो तो मैं भाग्य बनाकर तुम्हारे हाथ में दूंगा। उस दिन से मेरी चिंता समाप्त हो गई और मैंने केवल निश्चिंत रहने का ही पुरूषार्थ किया।

एक दिन अमृतवेले बाबा स्वयं मेरे पास वरदान देने आये। आते ही कहा -'बच्ची, कभी भी किसी की बातों में मत आना। नहीं तो बाप की बातें भूल जायेंगी। क्योंकि दूसरों की बातों में मिलावट अवश्य होती है और मिलावट दु:खदायी होती है।' उस दिन से यह महामंत्र मेरे जीवन का आधार बन गया। ब्रह्मा बाबा सर्वंश त्यागी थे। न सिर्फ तन-मन-धन, पर स्वभाव संस्कार का भी त्याग। ब्रह्मा बाबा ने शिव बाबा की हर आज्ञा को एक्यूरेट फालो किया। कभी कोई श्रीमत के अलावा संकल्प भी नहीं उठा। ब्रह्मा बाबा सदा एक शिव बाबा की याद में समाये रहते थे। उनके जीवन में प्रेक्टिकल में हमने देखा, एक बल एक भरोसा। जरा भी श्रीमत में मनमत मिक्स नहीं की। हमें भी ब्रह्माबाबा समान आज्ञाकारी, वफादार व ईमानदार होकर रहना है। बाबा ने कहा है जिसकी दिल बड़ी उसकी भण्डारी और भण्डारा कभी खाली नहीं हो सकता है। जहाँ निमित्त भाव है, सत्यता है, नि:स्वार्थ प्रेम है वहाँ सफलता है। बाबा ने कहा था, बच्ची सी फादर, फालो फादर। इससे कोई बात बड़ी नहीं लगती है। बाबा ने हमारे लिए कितना किया है। हमें बाबा को देखना है। जैसे बाबा को कोई भी हद की बात अच्छी नहीं लगती है। आदि से देखा है, बेहद का बाबा है, भले बेगरी पार्ट है। फिर भी खिलाने में बहलाने में बड़ी दिल। और कुछ नहीं है तो भले गुड़ तो है। ज्वार के आटे में गुड़ डाल के खिला दो। खिलाने में बहुत बड़ी दिल वाला था। कभी बाबा ने पहले नहीं खाया होगा जब तक बच्चों ने नहीं खाया हो। कितना बाबा ने हम बच्चों को सम्भाला है, ऐसे अपनी सम्भाल अच्छी तरह से करना। बाबा की अमानत हैं।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

एक बार कराची में बाबा हमारे पास आये। बाबा ने कहा बच्ची अपने पांव बाबा को दिखाओ। बच्ची तुम्हारे पांव की तो पूजा होने वाली है तो यह पांव बड़े अच्छे होने चाहिए। एक बार हम मधुबन में ग्रुप लेकर आई, उस समय इतनी बरसात पड़ी थी जो रास्ते बंद हो गये, सामान नीचे छोड़कर कुछ दूर पैदल आये, तो बाबा रात को ग्यारह बजे तक गर्म पानी नैपकीन लेकर इंतजार में बैठा था, बाबा ने हमारे पांव धुलाई किये। बाबा ने इतना प्यार किया, इतना किया, वह वण्डरफुल सीन थी। बाबा का बच्चों से कितना प्यार है। फिर बाबा ने सिखाया तुम कमल फूल समान रहो, तुम्हारा पांव कीचड़ में न पड़ जाए। इतनी तुम्हारी न्यारेपन की स्थिति हो, जो जरा भी चेहरे पर न आए कि यह बात क्या हुई, कैसे हुई। शक्ल पर आया तो न्यारापन नहीं है। अंदर इतनी शक्ति नहीं है, जो देह, सम्बन्ध, बातों से न्यारा बना दे। साकार में एक बार बाबा से बातें की, बाबा मेरा जो आपमें विश्वास है लेकिन क्या आपका मेरे में विश्वास है? पहले मन में कहा फिर साकार में कहा -बाबा मेरा तो आपके सिवाए कोई नहीं है, आपको तो अनेक हैं, मैं एक आपको पसंद नहीं आयेंगी तो आप दूसरे को पसंद कर लेंगे। मैं कहां जाऊंगी? तो मैंने बाबा को पूछा - बाबा आपका मेरे में विश्वास है? तो बाबा ने बहुत प्यार से सिर पर हाथ रखा। सच्चाई से चलकर, बाबा के डायरेक्शन पर, श्रीमत पर चलकर इतना विश्वास में मजबूत बन जाएं जो सबका विश्वास हममें बैठ जाए। बाबा हमेशा कहते थे कि सत् धर्म की स्थापना करने के लिए किसी की निंदा करना बड़ी भूल है। हरेक अपने भाग्य का खाता है, हमें अपना कर्म करना है। बाबा ने कहा कर्मों की गुह्य गति को जानें। गुह्य गति को नहीं जाना माना परमात्मा को नहीं जाना। बाबा ने हम सभी की विशेषताओं का वर्णन कर गुणवान बना दिया।

सम्पूर्ण निश्चय से फरिश्ता बने बाबा

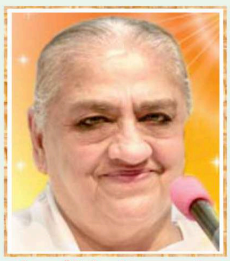

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

हम सभी दिल से यही गीत गाते हैं कि बाबा हमें आप जैसा बनना ही है। साक्षात्कारमूर्त भी तब बनेंगे जब साक्षात बाप समान बनेंगे। तो बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा को टच किया, प्रेरणा मिली, तो उसी संकल्प में उन्होंने कभी भी थोड़ा भी संशय नहीं लाया। इतने बड़े ज्वैलर थे लेकिन त्याग करने में जरा सा भी सोचा? नहीं। बस, मुझे जो बाबा कहता है, वह करना ही है, इसको कहा जाता है निश्चय। जिसे लोग असम्भव कहते हैं, वह सम्भव करके दिखाया। संकल्प मात्र भी संशय नहीं हुआ, इसको कहते हैं बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा समान बनना तभी साक्षात्कारमूर्त हो सकते हैं। पहला फाउण्डेशन है निश्चय। निश्चय भी सिर्फ बाबा में नहीं, सब बातों में निश्चय हो। बाबा में निश्चय, स्वयं में, ड्रामा में तथा ब्राह्मण परिवार में निश्चय। इन चारों निश्चय को बिल्कुल टाइट करो, जो हमारा मन और बुद्धि किसी भी बात में जरा भी हिले नहीं। इसीलिए बाबा का स्लोगन है -न बुरा देखो, न सुनो, न बोलो और न सोचो। व्यर्थ को देखते हुए भी देखो ही नहीं क्योंकि उससे हमारा कोई काम ही नहीं है, इसको साइडसीन समझो। साइडसीन में बुरा भी देखना पड़ता है तो अच्छा भी देखना पड़ता है लेकिन फिर भी लोग साइडसीन देखने तो जाते ही हैं क्योंकि इसमें भी मनोरंजन करने की कला होती है। तो यहाँ भी चलते-चलते कुछ भी होता है ज्ञान के विपरीत तो आप अपनी मस्ती में, फरिश्ता बनकर डबल लाइट रहकर देखो और सुनो तो उसका असर शक्ल पर नहीं आयेगा। चिन्ता, फिकर अथवा घबराहट की रेखायें देखने को नहीं मिलेगी। जैसे ब्रह्मा बाबा कितना बेफिक्र था, हमको भी बाप के समान बनना है तो ऐसा बेफिक्र बादशाह बनना पड़ेगा, पक्का निश्चयबुद्धि बनना पड़ेगा। कोई भी बात में संशय न हो। तो कोई भी कुछ करता है हमको साइडसीन समझ करके पार करना है, डबल लाइट बन उड़ते रहना है, अंदर कोई बोझ नहीं। बोझ होगा तो ऊपर उड़ नहीं सकेंगे। हल्की चीज आपे ही उड़ जाती है, तो हम जो कहते हैं तीव्र पुरूषार्थी बनें, साक्षात्कारमूर्त बनें, यह तो बड़ी बात है, पहले वे गुण-शक्तियां तो धारण हों। चेहरे पर मुस्कराहट है, जो साक्षात्कारमूर्त बनो! अब हमको फरिश्ता बनना है, क्योंकि ब्रह्मा बाबा से हमारा बहुत प्यार है। ब्रह्मा बाबा अभी अव्यक्त वतन में हमारे लिए फरिश्ते रूप में बैठे हैं। उनसे प्यार है तो हमें उनके समान बनना होगा। तो बाप समान बनने के लिए ब्रह्मा बाबा की विशेषताओं को पहले जीवन में धारण करो। चलन एवं चेहरे में दिव्यता हो साधारणता नहीं।